दिनांक **9** फरवरी, **2020** को माननीया राज्यपाल, झारखण्ड श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी का ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, आबू रोड, राजस्थान में दीक्षान्त समारोह के अवसर पर अभिभाषण के मुख्य बिन्दु:–

ऊँ शांति

मंचासीन महानुभाव

1. राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका
2. राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाईजी, महासचिव
3. राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय भाईजी, अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

- मुझे ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन में आयोजित इस दीक्षान्त समारोह में आप सभी के मध्य सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है।

- भारत देश के पास एक विशाल मानव सम्पदा है। यह युवाओं का देश है तथा असीम संभावनाओं वाला राष्ट्र है। इस विशाल मानव सम्पदा को शिक्षा प्रदान करके श्रेष्ठ नागरिक बनाना सबसे महान और पुण्य कर्म है।

- सर्वप्रथम गोपाल कृष्ण गोखले पहले भारतीय थे जिन्होंने आज से लगभग 100 वर्ष पहले **Imperial Legislative Assembly** से भारतीय बच्चों के लिए अनिवार्य रूप से शिक्षा प्रदान करने की माँग की थी जिसे बाद में हमारे संविधान में भी सम्मिलित किया गया।

- हमारा संविधान 14 वर्ष की उम्र तक के प्रत्येक बालक और बालिका को बिना किसी भेदभाव के नि:शुल्क और अनिवार्य रूप से शिक्षा प्राप्त करने का संवैधानिक अधिकार प्रदान करता है। भारतीय संविधान के 86वें संशोधन 2002 द्वारा प्रदत्त नि:शुल्क शिक्षा के अधिकार को मूर्त रूप प्रदान किया गया।

- भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। प्राचीन भारतीय शिक्षा अपने समय की सबसे समुन्नत और उत्कृष्ट शिक्षा थी। भारत को विश्वगुरू कहा जाता था। यह ज्ञान केन्द्र के रूप में विख्यात था। प्राचीन तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालयों की गौरवशाली शैक्षिक परम्परा आज भी हमें गौरवान्वित कर देती है।

- प्राचीन गुरूकुल और ऋषि चिंतन परम्परा में विकसित ज्ञान के उत्कृष्ट तत्व आज भी सम्पूर्ण मानवता के लिए अमूल्य आध्यात्मिक धरोहर है।

- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के ओजस्वी नेतृत्व में नये भारत के संकल्प का सपना तकनीक के पहिये पर सवार होकर आध्यात्मिकता की ओर एक नई उड़ान भर रहा है। भारत को पुन: विश्वगुरू बनाने का उद्घोष वातावरण में सुनाई दे रहा है।

- वर्तमान समय में समाज में तीव्र गति से बढ़ रही हिंसा की प्रवृत्ति, यौन-अपराध, भ्रष्टाचार, मानवीय मूल्यों का पतन इत्यादि समस्याएं

प्रत्येक जागरूक भारतीय को विचलित एवं वर्तमान शिक्षा की दिशा एवं दशा पर सोचने के लिए विवश कर देती हैं।

- शिक्षा के गुणात्मक स्तर में निरंतर पतन और विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व से पलायन की प्रवृत्ति समाज एवं राष्ट्र दोनों के लिए घातक है। केवल परिश्रमी, ईमानदार और उद्यमशील नागरिकों के बल पर ही भारत को विश्व गुरु बनाने की संकल्पना को साकार करना संभव है। वर्तमान शिक्षा की इस ज्वलंत समस्या का सार्थक समाधान खोजना ही इस मूल्य शिक्षा महोत्सव का उद्देश्य है।

- विश्व विख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आईंस्टीन ने कहा था कि 'वर्तमान विश्व हमारे विचारों की उत्पत्ति है, अत: विश्व को बदलने के लिए हमें अपने विचारों को बदलना होगा।' ये अति हर्ष का विषय है कि विचारों के अध्ययन तथा परिवर्तन की पहल ब्रह्माकुमारीज़ ने की है।

- मुझे ज्ञात हुआ है कि ब्रह्माकुमारीज़ ने युवाओं के लिए कई विश्वविद्यालयों तथा शिक्षा संस्थानों ने राजयोग Taught Lab खोलने की पहल की है जिसमें विद्यार्थी शान्ति से बैठकर अपने विचारों को समझ कर तथा उन पर मनन करके आवश्यक परिवर्तन करते हैं जिससे विचारों में सकारात्मकता तथा जीवन में तनाव व चिंता के स्थान पर शान्ति व आनंद की अनुभूति होती है। ऐसे प्रयोग और अधिक संस्थानों में तथा बड़े स्तर पर किए जाने चाहिए।

- नये भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए एक ऐसे नये ज्ञान और एक नई शिक्षा नीति की आवश्यकता है जो वर्तमान राष्ट्रीय, सामाजिक और मानवीय जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं और चुनौतियों का समाधान करने का एक बेहतर विकल्प बन सकें।

- यह कहते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय विगत् 83 वर्षों से समाज में नैतिक, मूल्य, राजयोग और आध्यात्मिक शिक्षा देते हुए लगभग 140 देशों में प्राचीन गौरवशाली भारतीय सांस्कृतिक परम्परा को आगे बढ़ा रहा है। .

- संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस संस्था को विश्वशान्ति, सद्भावना और मानवीय मूल्यों के विकास के योगदान को स्वीकार करते हुए **'अंतर्राष्ट्रीय शांतिदूत'** पुरस्कार से सम्मानित किया है। यह हमारे देश के लिए अत्यंत गौरव की बात है।

- मुझे जानकारी प्राप्त है कि ब्रह्माकुमारीज़ का शिक्षा प्रभाग लगभग एक दशक से मूल्य, योग और आध्यात्मिक शिक्षा का विविध पाठ्यक्रम तैयार करके लगभग 20 विश्वविद्यालयों के साथ सहमति पत्र (MoU) द्वारा शिक्षा प्रदान कर रहा है। यह हमारी आधुनिक युवा पीढ़ी को भारतीय मूल्यों और संस्कारों से शिक्षित एवं दीक्षित करने के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है।

- मुझे यह भी मालूम हुआ है कि ब्रह्माकुमारीज़ का शिक्षा प्रभाग भारत के विभिन्न राज्यों, केन्द्रीय विद्यालय तथा नवोदय विद्यालय के शिक्षकों को समय प्रति समय अनेक स्थानों में मूल्य, आध्यात्मिक शिक्षा एवं राजयोग का प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। मुझे यह भी जानकारी मिली है कि ब्रह्माकुमारीज़ का शिक्षा प्रभाग ने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों के लिए विशेष 'टच द लाईट' और 'लिविंग वैल्यूज़' के नाम से पाठ्यक्रम तैयार किया है जिसे भारत के विभिन्न प्रांतों एवं विदेशों में भी सफलतापूर्वक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके परिणाम स्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ के यूनिसेफ ने इस संस्था को अपने सलाहकार के रूप में मान्यता प्रदान किया है।

- वर्तमान समय में विद्यार्थियों में उत्पन्न हो रही नकारात्मक मनोवृत्तियाँ और उससे उत्पन्न हो रही समस्याओं का समाधान करना शिक्षा जगत की सबसे बड़ी समस्या और चुनौती दोनों हैं। आध्यात्मिकता एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति का अनुसंधान करके ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग ने मूल्य शिक्षा पर विभिन्न पाठ्यक्रम तैयार करके शिक्षा जगत की सबसे महत्वपूर्ण विलुप्त कड़ी Value Education को वर्तमान शिक्षा प्रणाली से जोड़कर एक नई दिशा प्रदान किया है। मूल्य शिक्षा विद्यार्थियों को आत्म-अनुसंधान का सुअवसर प्रदान कर उन्हें वर्तमान जीवन से जोड़ती है। Value Education का अध्ययन और अध्यापन दोनों स्वयं तथा संपूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी है।

- ब्रह्माकुमारीज़ के पास मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा के अनुभवी प्रशिक्षकों तथा सुविधाओं का एक विशाल नेटवर्क है जिसका लाभ उठाकर शिक्षा के क्षेत्र में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण किया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों के अंदर मूल्यों में आस्था, जीवन में अनुशासन, कौशल, स्वच्छता की भावना तथा पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता की भावना को उत्पन्न करके एक सशक्त नये भारत की संकल्पना को साकार किया जा सकता है।

- आज के इस दीक्षांत समारोह में डिग्री प्राप्त करने वाले सभी को बधाई देते हुए मैं आशा करती हूँ कि वे मूल्य एवं आध्यात्मिकता के इस कार्यक्रम की सहायता से सच्चे मन तथा प्रयास से सामान्य व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाने का संकल्प लेंगे।

ओम शान्ति।

जय अध्यात्म! जय हिन्द!